The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 4 | April 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

मुंडा जनजाति की संस्कृति, पहचान और विकास में अखड़ा की भूमिका : खूंटी जिला व पश्चिमी सिंहभूम के संदर्भ में

दुलारी सुमन ढोडराय

शोधार्थी, मानव विज्ञान विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची (झारखंड) ईमेल आईडी - sumandulari12@gmail.com

डॉ. ख्रीस्त विश्वासी मीना तिर्की

सहायक प्रोफेसर सह निर्देशक, मानव विज्ञान विभाग गोस्सनर कॉलेज, रांची (झारखंड)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.20140637

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 26-04-2026

Published: 10-05-2026

Keywords:

मुंडा जनजाति, अखड़ा, परंपरा, पहचान, विकास, सामाजिक-सांस्कृतिकरण, आधुनिकीकरण, शहरीकरण, विस्थापन

ABSTRACT

अखड़ा का मुंडा जनजाति की सामाजिक - सांस्कृतिक जीवन में विशेष महत्व है। अखड़ा गाँव के मध्य में पेड़ से घिरे खुली सामुदायिक स्थल होता है, जहां गाँव में मुख्य पर्व - त्योहार के समय पाहन द्वारा पूजा-पाठ की क्रिया पूर्ण करने के बाद पूरे गाँव के लोग समूह में एकत्र होकर पारंपरिक ढोल - नगाड़े की ताल पर लोकगीत, लोक-नृत्य करते हैं, जिससे समुदाय की एकता और पहचान मजबूत होती है। इस तरह से अखड़ा मुंडा आदिवासी की सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह केवल मनोरंजन का स्थान नहीं, बल्कि परंपराओं को जीवित रखने और नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति से जोड़ने का केंद्र भी है। अखड़ा में युवाओं को पारंपरिक नृत्य, लोकगीत, रीति-रिवाज और सामाजिक मर्यादाएं सिखाई जाती है। विकास की दृष्टि से अखड़ा का योगदान महत्वपूर्ण है। यहाँ गाँव की ग्राम सभाएं आयोजित होती है, साथ ही गाँव में किसी तरह की आपसी समस्या होने पर उसका समाधान सामूहिक चर्चा के बाद सामूहिक सहमति से उसका अंतिम निर्णय लिया जाता है, जिससे सामाजिक सहयोग, लोकतांत्रिक न्याय व्यवस्था मजबूत होती है। इससे समुदाय में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता और सामूहिक जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है। वर्तमान

समय में मुंडा आदिवासी गाँव में सामाजिक - सांस्कृतिकरण, शहरीकरण, आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण अखड़ा का स्वरूप बदल रहा है। इस अध्ययन में मुंडा जनजाति की संस्कृति, पहचान और विकास में अखड़ा की भूमिका को जानने का प्रयास किया जाएगा, साथ ही अखड़ा के बदलते स्वरूप के कारण व कारक को जानने का प्रयास किया जाएगा।

परिचय :

जनजाति से तात्पर्य उस समुदाय से है जिसे कलांतर में जंगली, वनवासी, प्रीमिटिव ट्राइव, एनिमिज़्म, आदिम, जैसे कई नामों से संबोधित किया गया है। एक जनजाति समान नाम धारण करने वाले परिवारों का संकलन है जो समान बोली बोलते हैं और एक ही भूखंड पर अधिकार करने का दावा करते हैं, अथवा दखल रखते हों। भारत में कई जनजातीय समुदाय निवास करतीं हैं जिनकी अपनी – अपनी अलग भाषाएं, बोलियाँ, संस्कृति, रीति-रिवाज, पारंपरिक ज्ञान, शासन व्यवस्था व कला है, जो इनकी वन आधारित आजीविका को बनाए रखते हैं। इनकी अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान प्रकृति के साथ गहरे जुड़ाव रखते हैं। विकास की अवधारणा इनके लिए केवल आर्थिक विकास नहीं, बल्कि पारिस्थितिक संतुलन और वन संसाधनों पर अधिकार की रक्षा के साथ ही सांस्कृतिक स्वायत्ता का समावेश है।

भारत के मूल निवासी समुदायों की अनोखी भाषाएं, बोलियाँ उनके रीति-रिवाज, विश्वास और जीवन जीने का तरीका जो प्रकृति से जुड़ी है, पीढ़ी – दर – पीढ़ी हस्तांतरित होती है। जनजाति लोगों का एक ऐसा समूह जो समान पूर्वज संस्कृति, भाषा और रीति-रिवाजों को साझा करते हैं अक्सर एक निश्चित क्षेत्र में रहते हैं। भारत में कई जनजातीय समुदाय हैं जैसे- भील, मुंडा, संथाल, उरांव, हो, गोंड, खासी आदि जिनकी अपनी विशिष्ट पहचान है; जो प्रकृति के साथ गहरे जुड़ाव पर आधारित है।

भारत की संस्कृति अनेकता में एकता का संदेश देती है यहाँ विभिन्न समुदाय के लोग विभिन्न भाषाओं, बोलियों का प्रयोग करते हैं और अपनी संस्कृति की रक्षा करने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। इनकी अध्ययन के क्रम में कई बातें उजागर होती है जो इस प्रकार से हैं :-

विविधता : भारत में कई जनजातीय भाषाएं व संस्कृति हैं जो भारतीय द्रविड़, ऑस्ट्रो-एशियाई और आर्य भाषा परिवारों से संबंधित हैं जैसे – गोंड (मध्य-भारत, द्रविड़ भाषा परिवार), मुंडा, संथाल (पूर्वी-भारत, ऑस्ट्रो-एशियाई),

भील (आर्य भाषा परिवार) की भीली भाषा, खासी (पूर्वोत्तर भारत- मेघालय, ऑस्ट्रो-एशियाई भाषा परिवार) की खासी भाषा, कोरगा (दक्षिण-भारत, द्रविड़ भाषा परिवार की कोरागा भाषा)। इनकी अपनी विशिष्ट पहचान व महत्व है।

संस्कृति : इनकी रीति-रिवाज, आस्था-विश्वास, कथा, कला, लोकगीत, नृत्य, सामाजिक संरचना (जैसे – परिवार, नातेदारी) और जीवन के मूल्य शामिल होते हैं; जो उनकी पीढ़ियों से चली आ रही परंपरा से बनते हैं।

पारंपरिक शासन व्यवस्था : हर जनजातीय समुदाय की अपनी परंपरागत शासन प्रणाली है जिसे मांझी शासन व्यवस्था, पड़हा व्यवस्था, मुंडा मानकी शासन व्यवस्था आदि नामों से जानते हैं।

पारंपरिक ज्ञान : यह भारत की स्वदेशी ज्ञान प्रणाली का एक व्यापक संग्रह जिसमें धर्म, दर्शन, गणित, खगोल, विज्ञान, आयुर्वेद, कला व उसमें निहित नैतिक मूल्य शामिल है।

मुंडा जनजाति – आदि काल से भारत में कई आदिवासी समुदाय निवास करती हैं इनमें से मुंडा आदिवासी समुदाय भी एक है इनकी अपनी विशिष्ट पारंपरिक रीति-रिवाज, कला-संस्कृति, भाषा, ज्ञान व शासन व्यवस्था है। मुंडा से अभिप्राय सम्पन्न व्यक्ति, गाँव के मुख्य या प्रधान से है। मुंडा लोग अपने – आपको होड़ोको अर्थात मनुष्य गण (इंसान) कहते हैं, और अपनी भाषा को होड़ो जगर अर्थात इंसान की भाषा कहते हैं। मुंडा लोग ऑस्ट्रो – एशियाटिक भाषा परिवार के अतर्गत आने वाली मुण्डारी भाषा बोलते हैं।

मुंडा जनजाति भारत की प्रमुख जनजातियों में से एक है। यह झारखंड की तीसरी बड़ी जनजाति है। जिसकी जनसंख्या सन् 2011 की जनगणना के अनुसार झारखंड में लगभग 12.29 लाख है। इनकी भौगोलिक विस्तार मुख्य रूप से खूंटी, रांची, लोहरदगा, रामगढ़, हजारीबाग, लातेहार, पश्चिमी – पूर्वी सिंहभूम, चतरा, सिमडेगा, गुमला, गढ़वा के अलावे झारखंड के कई अन्य क्षेत्रों में निवास करतीं हैं। मुंडा जनजाति झारखंड में कोलेरियन समूह की सशक्त एवं शक्तिशाली जनजाति है। इनका रंग गहरा भूरा – सांवला या काला, कद मध्यम या चौड़ी, बाल काला व सीधा या लहरदार, होंठ मध्यम तथा शरीर सुडौल एवं पुष्ट होता है।

अखड़ा : अखड़ा मुंडा आदिवासी समुदाय की सामाजिक-सांस्कृतिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, आमतौर पर अखड़ा गाँव के बीचोंबीच एक खाली स्थान पर अवस्थित होता है, जो चारों तरफ किसी बड़े पेड़ों से घिरा होता है और उसके ठीक नीचे छोटे-बड़े पत्थर रखे होते हैं, जो लोगों के बैठने के काम आते हैं। इन पत्थरों को रसिका दिरि (खुशी/उत्सव) कहा जाता है। यहाँ पर गाँव की ग्राम सभाएं, सामुदायिक पर्व-त्योहार के समय सामूहिक में पारंपरिक वाद्ययंत्र के साथ लोक-नृत्य, लोकगीत के माध्यम से उल्लास मनाते हैं। अखड़ा मुंडा जनजाति की सामाजिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक, परंपरागत शासन प्रणाली व सामाजिक जीवनशैली का एक मुख्य आधार स्तंभ है। यहाँ मुंडा संस्कृति को संरक्षित करने, युवा पीढ़ी को अपनी परंपरा से अवगत करने के साथ – साथ समस्यों

को सुलझाने का केंद्र भी है। अखड़ा मुंडाओं की सामुदायिक पहचान को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो उनके सामाजिक-सांस्कृतिक विकास से जुड़ी है।

वर्तमान समय में आधुनिकीकरण, शहरीकरण, सामाजिक-सांस्कृतिकरण व विस्थापन के कारण अखड़ा की अस्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। बहुत से गाँवों में अखड़ा तो है, लेकिन अब वहाँ पहले जैसा ना पेड़ है, ना चिड़ियों की टोलियाँ और ना ही लोगों की मंडलियाँ बैठतीं हैं। बस सप्ताह में गुरुवार के दिन नाम मात्र की बैठक होती है। मेरे द्वारा इस अध्ययन में मुंडा जनजाति की संस्कृति, पहचान और विकास में अखड़ा की भूमिका को समझने का प्रयास किया गया है।

पूर्व में किए गए अध्ययन :

प्रस्तुत अध्ययन के लिए पूर्व में किए गए अध्ययन की समीक्षा पुस्तकालय कार्य के आधार पर की गई है। अध्ययन से संबंधित जो भी कार्य पूर्व में हो चुकी है उसकी समीक्षा यहाँ प्रस्तुत की जा रही है :

- हॉफमैन, जॉन बैप्टिस्ट, (1937-1950) "एनसाइक्लोपीडिया मुण्डारिका" इस पुस्तक में मुंडा समाज की सांस्कृतिक संस्थाओं का विस्तृत अध्ययन करते हैं, इनके अनुसार अखड़ा सामुदायिक संगठन और सांस्कृतिक निरंतरता का महत्वपूर्ण केंद्र है।

- कुमार सुरेश सिंह (1966) "The Dust Storm and the Hanging Mist" इस पुस्तक में आदिवासी समाज में पारंपरिक संस्थाओं की भूमिका पर चर्चा किए हैं जिसमें अखड़ा को सामाजिक एकता का केंद्र बताया है।

- मिंज निर्मल (2017) "आदिवासी संस्कृति और पहचान पर लेख" में लेखक ने अखड़ा को सामुदायिक जीवन और पहचान को आधार माना है, साथ ही आधुनिक समय में इसकी बदलती भूमिका पर भी विचार किया है।

- मुंडा राम दयाल "Akhra: The Cultural Arena of Tribal Life" इस लेख में अखड़ा को लेखक ने सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक केंद्र बताया है; इनके अनुसार अखड़ा नृत्य, संगीत और सामुदायिक निर्णय का स्थान है।

- रॉय एस. सी. (1912) "The Mundas And Their Country" में मुंडा जनजाति के जीवन में अखड़ा की भूमिका का विस्तार से वर्णन है शरद चंद्र रॉय ने अखड़ा को युवाओं के प्रशिक्षण और सामुदायिक जीवन का केंद्र माना है।

- सच्चिदानंद (1979) "The Changing Munda" में मुंडा समाज में सामाजिक परिवर्तनों का अध्ययन किया है उनके अनुसार आधुनिकता शिक्षा तथा शहरीकरण के प्रभाव से अखड़ा जैसी पारंपरिक संस्थानों की संरचना एवं कार्यप्रणाली में परिवर्तन हो रहे हैं।

- Verrier Elwin (1964) “The Tribal World Of Verrier Elwin” इस पुस्तक में आदिवासी जीवन और संस्कृति में सामुदायिक स्थलों के महत्व का वर्णन है जिसमें अखड़ा को सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक माना है।

- विद्यार्थी एल. पी. एवं बिनय कुमार राय (1976) “The Tribal Culture of India” में आदिवासी संस्कृति के संरक्षण और प्रसार में अखड़ा की भूमिका को महत्वपूर्ण संस्थान के रूप में माना है।

अध्ययन का महत्व : वर्तमान अध्ययन में मुंडाओं की सामाजिक – सांस्कृतिक, पहचान और विकास में अखड़ा की भूमिका को समझने का प्रयास किया गया है। मुंडाओं की संस्कृति, प्रकृति के साथ गहराई से जुड़ी हुई है, इसलिए प्रकृति संरक्षण व संवर्धन में भी अखड़ा का महत्वपूर्ण योगदान है। मेरे द्वारा इस अध्ययन से मुंडा समाज की सामाजिक – सांस्कृतिक, आधुनिकीकरण, शहरीकरण और विस्थापन के कारण अखड़ा संस्कृति में हो रहे परिवर्तन व प्रभाव को जानने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में अखड़ा की पृष्ठभूमि, संरचनात्मक विशेषताओं तथा सामाजिक विकास में उसकी बहुआयामी भूमिका का विश्लेषण किया गया है। पूर्व में कई विद्वानों ने अखड़ा पर अलग - अलग समय पर शोध किए हैं। लेकिन आधुनिक संदर्भ इस क्षेत्र में अखड़ा की बदलती भूमिका और युवाओं पर इसका प्रभाव, शहरीकरण और वैश्वीकरण का प्रभाव साथ ही आधुनिक एवं डिजिटल युग में पारंपरिक सामाजिक – सांस्कृतिक संस्थानों का रूपांतरण को लेकर कम अध्ययन हुए हैं। इस शोध अध्ययन में इन क्षेत्रों पर जो प्रभाव हुए हैं उसे विशेष ध्यान में रखते हुए वर्तमान में यह शोध अध्ययन किया गया है। इसलिए यह शोध पहले के शोध से अलग एवं महत्वपूर्ण है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. मुंडा जनजाति की संस्कृति, पहचान और विकास में अखड़ा की भूमिका को जानना।
2. वर्तमान समय में अखड़ा संस्कृति में हो रहे परिवर्तन व प्रभाव को जानना।

शोध परिकल्पना :

1. मुंडा जनजाति की संस्कृति, पहचान और विकास में अखड़ा की भूमिका को प्रकाश में लाना।
2. वर्तमान समय में हो रहे परिवर्तन व प्रभाव को प्रकाश में लाना।

शोध प्रविधि:

अध्ययन क्षेत्र : इस अध्ययन के लिए झारखंड राज्य के खूंटी जिला व पश्चिमी सिंहभूम के अंतर्गत आने वाले कुल 15 मुंडा गाँव को अध्ययन की इकाई मानकर उद्देश्य पूर्ण के लिए चयन किया गया है।

अध्ययन की इकाई : इस अध्ययन में सूचना संकलन के लिए मुख्य रूप से गाँव के मुंडा, पाहन, पानीभरा, बुद्धिजीवि वर्ग, बुजुर्ग जानकार लोगों को शामिल किया गया है।

नमूना का आकार : अध्ययन के लिए दोनों जिले के गाँव के पाहन, मुंडा के साथ-साथ 60 से 80 बुद्धिजीवि, बुजुर्ग जानकार सदस्यों को शामिल किया गया है।

तथ्य संकलन की तकनीक : प्राथमिक आँकड़े एकत्रित करने के लिए मानव विज्ञान तकनीक जैसे – अवलोकन, अर्द्ध सहभागी अवलोकन, साक्षात्कार, केंद्रित समूह साक्षात्कार, अनुसूची, वैयक्तिक अध्ययन, छायाचित्र तकनीक का प्रयोग किया गया है। इसके साथ ही शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए द्वितीयक आँकड़े जैसे – शोध पत्र – पत्रिका, न्यूज पेपर, प्रकाशित तथा अप्रकाशित पी.एच.डी. लेख, पुस्तकें आदि का सहारा लिया गया है।

तथ्य विश्लेषण एवं परिचर्चा ((Finding and Discussion) :

रांची, खूंटी व पश्चिमी सिंहभूम से सटे क्षेत्रों के मुंडा बहुल सभी गाँव में अखड़ा देखने को मिलते हैं, अखड़ा गाँव के मध्य में पुराने बड़े पेड़ों से घिरे हुए खाली स्थान पर स्थित होता है। पेड़ के ठीक नीचे बड़े पत्थर रखे होते हैं जिसे मुंडा में रसिका दिरि कहा जाता है, यह पत्थर लोगों के बैठने के लिए होते हैं, गाँव में कोई भी पर्व – त्योहार या ग्राम सभा के समय लोग बैठते हैं। मुंडा लोग अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परम्पराओं और सामुदायिक जीवन-शैली के लिए प्रसिद्ध है। मुंडा समाज की पारंपरिक सामाजिक संरचना में अखड़ा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह एक सार्वजनिक स्थल है जहां युवा व वयस्क वर्ग के लोग एकत्रित होकर पारंपरिक, सामाजिक – सांस्कृतिक, राजनीतिक गतिविधियां सम्पन्न करते हैं। यह केवल गीत – नृत्य का स्थान ही नहीं, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, आर्थिक विकास का केंद्र भी रहा है। मुंडा समुदाय के जीवन में अखड़ा समुदायिक एकता और पहचान का प्रतीक है, साथ ही मुंडा आदिवासी समाज में मुंडाओं की आत्मसम्मान और संघर्ष की याद दिलाता है, विशेषकर **"धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा"** के नेतृत्व में अंग्रेजों और जमींदारों, साहूकारों के अन्याय के खिलाफ हुए **उलगुलान** के समय मुंडा समुदाय को जागरूक व एकजुट करने में अखड़ा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, उलगुलान के समय **बिरसा आबा** गाँव – गाँव जाकर लोगों को पारंपरिक ढोल – नगाड़े, लोकगीत और लोकनृत्य के माध्यम से अपने समाज के साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज बुलंद करने के लिए प्रेरित किए। इसका जीवंत उदाहरण खूंटी जिला के अंतर्गत आने वाला **डोम्बारी** गाँव और पश्चिमी सिंहभूम के अंतर्गत आने वाले **संकरा** गाँव का अखड़ा है, आज भी इस गाँव के मुंडा बुजुर्गों से अखड़ा और अखड़ा से **भगवान बिरसा आबा** के संबंध व उनके संघर्ष की कहानी सुनने को मिलते हैं। और उनके आंदोलनों को याद कर नई पीढ़ी को प्रेरित करते हैं, और एकजुट होने की प्रेरणा देते हैं। इसलिए अखड़ा मुंडा समुदाय के लिए एक ऐतिहासिक विरासत भी है। मुंडा समाज में अखड़ा एक संस्थान के रूप में कार्य करती है। अखड़ा को मुंडा सरना समाज में एक मुख्य पूजा

स्थल के रूप में भी जाना जाता है, अखड़ा मुंडाओं की सामाजिक – सांस्कृतिक व प्रशासनिक जीवन का मुख्य: केंद्र बिन्दु है। जिस गाँव में अखड़ा नहीं है इसका मतलब उस गाँव में आदिवासी मुंडा नहीं है। अखड़ा मुंडा समाज की पहचान, विकास के साथ ही संस्कृति और प्रकृति की संवर्धन – संरक्षण का एक मुख्य आधार स्तंभ है। अखड़ा में गाँव की ग्राम सभाएं, गाँव की समस्यों का निपटारा किया जाता है, साथ ही करम, बा (सरहुल), सोहराई पर्व के समय पाहन द्वारा पूजा – पाठ के बाद पारंपरिक वाद्य-यंत्र के ताल पर समूह में नाचने गाने व उल्लास मनाने का केंद्र भी है। जहां कोई भेदभाव, ऊँच – नीच की भावना नहीं होती है। गाँव के सभी वर्ग के लोग बिना किसी भेदभाव के आपस में मिलकर खुशियां मनाते हैं, जो भारतीय संस्कृति अनेकता में एकता को मजबूत करती है। इसके अलावे प्रतिदिन सुबह दोपहर और शाम के समय गाँव के बुजुर्ग व युवा यहाँ एकत्रित होकर हंसी – मजाक के साथ - साथ गाँव – समाज व विश्व में चल रहे कई मुद्दों पर चर्चा भी करते हैं। इसके अलावे अखड़ा बच्चों के लिए भी खेलने का केंद्र है। जो उनके मानसिक, शारीरिक विकास में मुख्य भूमिका निभाती है। अखड़ा को मुंडा संस्कृति संरक्षण व संवर्धन करने, तथा युवा पीढ़ी को अपनी परंपरा से अवगत करने के लिए एक केंद्र के रूप में भी जाना जाता है। अखड़ा मुंडाओं की सामुदायिक पहचान को मजबूत बनाती है; जो उनके समग्र विकास से जुड़ी है। किसी भी मुंडा गाँव में अखड़ा की स्थिति को देखकर उस गाँव की परंपरागत, सामाजिक – सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनीतिक व्यवस्था के विकास व पतन का पता चलता है।

गाँव – संकरा (पश्चिमी सिंहभूम) का अखड़ा, (जहां धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ उलगुलान करने व मुंडा समाज में जागरूकता लाने के लिए बैठक करते थे) यह अखड़ा मुंडाओं के लिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण से आज भी बहुत महत्वपूर्ण है। आज भी यहाँ बैठक होती है साथ ही सरहुल करम पर्व के समय पूजा – पाठ के बाद सामूहिक नृत्य आयोजित होती है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण : ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अखड़ा की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। यह आदिवासी समाज की सामुदायिक जीवन – व्यवस्था का अभिन्न अंग है। औपनिवेशिक काल में भी बाहरी प्रशासनिक व्यवस्थाएं व संरचनाएं लागू की गई, तब भी अखड़ा ने स्थानीय सामाजिक – सांस्कृतिक संगठन को बनाए रखा।

सांस्कृतिक संरक्षण और पहचान : अखड़ा मुंडा संस्कृति के संरक्षण का एक जीवंत मंच है। सामूहिक पर्व – त्योहार सरहुल, करम, सोहराई जैसे मुख्य पर्व के अवसर पर सामूहिक पूजा – पाठ के बाद लोकगीत, लोक-नृत्य और पारंपरिक वाद्य यंत्र, माँदर, ढोल-नगाड़े, बाँसुरी के मधुर सुर ताल में सामूहिक नृत्य की प्रस्तुति उसकी सांस्कृतिक निरंतरता को सुनिश्चित करती है। लोककथाएं, दंतकथाएं, मिथक और पूर्वजों की गाथाएं, इतिहास नई पीढ़ी को अखड़ा से ही सिखाई व बताई जाती है। जिससे लोक-स्मृति का संचार होता है। इस प्रकार से अखड़ा मुंडा सांस्कृतिक अस्तित्व व अस्मिता को बनाए रखने का मजबूत व सशक्त माध्यम है।

शिक्षा और नैतिक प्रशिक्षण : अखड़ा एक अनौपचारिक शिक्षण संस्थान के रूप में कार्य करती है। यहाँ पारंपरिक कृषि ज्ञान, पर्यावरणीय समझ, लोक – इतिहास और सामाजिक – सांस्कृतिक सामुदायिक उत्तरदायित्व की शिक्षा दी जाती है। गाँव के बुजुर्गों से युवा अनुशासन, सम्मान, नेतृत्व और सामूहिक जीवन के मूल्यों व सामाजिक आचरण सीखते हैं। लैंगिक सहभागिता के माध्यम से सामाजिक संतुलन का अभ्यास होता है। जो व्यक्तित्व विकास

और सामाजिक स्थायित्व में योगदान देती है। इस तरह अखड़ा एक अनौपचारिक शैक्षिक संस्थान के रूप में कार्य करता है।

परंपरागत शासन व्यवस्था : पड़हा व्यवस्था व मुंडा मानकी व्यवस्था के अंतर्गत अखड़ा सामुदायिक विचार – विमर्श व निर्णय लेने का केंद्र है, ग्राम सभा की बैठक और विवाद निपटान की प्रक्रिया यहीं होती है, जिसका नेतृत्व पारंपरिक मुंडा, मानकी, मांझी, पड़हा राजा, गाँव के मुख्य द्वारा सामुदायिक सामूहिक सहमति से अंतिम निर्णय लिया जाता है। जो सामूहिक सहमति पर आधारित निर्णय – प्रक्रिया पारंपरिक लोकतांत्रिक मूल्यों को संरक्षित रखते हुए लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करती है। इससे स्थानीय स्वशासन और लोकतांत्रिक परंपरा मजबूत होती है।

आधुनिक संदर्भ में अखड़ा : आधुनिकीकरण, शहरीकरण और वैश्वीकरण, सांस्कृतिकरण के प्रभाव से पारंपरिक संरचनाएं चुनौती का सामना कर रही है। शहरीकरण व वैश्वीकरण को बढ़ावा देने के कारण आदिवासी गाँव नगर या शहरों के अंदर आ गए, जिससे शहरीकरण का विकास हो रहा है, साथ ही वैश्वीकरण के कारण गाँव को विस्थापन का सामना करना पड़ रहा है, जिसके कारण वहाँ निवास करने वाली पूरी समुदाय की सामाजिक – सांस्कृतिक, राजनीतिक व आर्थिक मूल्यों में निहित विशेषता व महत्व का ह्रास हो रहा है। इसका सीधा प्रभाव अखड़ा पर भी पड़ता है अखड़ा मुंडा समाज का वह केंद्र बिन्दु है जहां से पूरे गाँव, समाज को संचालित करने का अंतिम निर्णय लिया जाता है, और उसी आधार पर गाँव व समाज का विकास तय किया जाता है। पिछले कुछ वर्षों में मुंडाओं की संस्कृति काफी प्रभावित हुई है इसका एक कारण बाहरी संस्कृति के संपर्क में आने से मुंडा संस्कृति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ना भी है। जहां शहरीकरण का विकास हुआ है वहाँ अब अखड़ा ही नहीं है, और जहां अखड़ा नहीं है वहाँ के मुंडा आदिवासी समुदाय की सामाजिक – सांस्कृतिक जीवनशैली ही पूरी तरह प्रभावित हो गई है। आज वर्तमान समय में शहरी क्षेत्रों व उससे सटे आस-पास के गाँव के मुंडा लोग अपनी पारंपरिक संस्कृति व पूजा पद्धति को छोड़कर दूसरे समाज की संस्कृति को अपना रहे हैं। जिसके कारण उनकी अपनी सामाजिक – सांस्कृतिक, धार्मिक आस्था भी प्रभावित हो रही है। इसके बावजूद सांस्कृतिक पुनर्जागरण आंदोलन में अखड़ा की पुनर्स्थापना हो रही है। आज की युवा पीढ़ी संगठन और सांस्कृतिक संगठन इसे पहचान के प्रतीक के रूप में पुन: पुनर्जीवित कर रहे हैं। सरकारी तथा गैर-सरकारी प्रयासों से सांस्कृतिक संरक्षण की दिशा में पहल की जा रही है। जो अखड़ा परंपरा और आधुनिकता के बीच सेतु का कार्य कर रहा है।

अखड़ा मुंडा आदिवासी संस्कृति पहचान का मूल केंद्र है। अध्ययन के क्रम में पाया कि पश्चिमी सिंहभूम व खूंटी जिला के गाँव में वर्तमान समय में अखड़ा का स्वरूप बदल चुकी है कहीं अखड़ा ही नहीं है तो कहीं काफी बदहाली स्वरूप में है। जो चिंता का विषय है। खूंटी से पश्चिम नागुरी क्षेत्र व हसादा क्षेत्र (खूंटी से पूर्व व पश्चिमी सिंहभूम) में अखड़ा कई प्रकार के होते हैं :

हसादा क्षेत्र के पारंपरिक अखड़ा :

1. **करम अखड़ा, बा अखड़ा/जदुर अखड़ा (सरहुल अखड़ा) :** यह अखड़ा गाँव के बीचो-बीच स्थित होती है, यहाँ करम, बा (सरहुल), सोहराई पर्व के समय गाँव के पाहन, मुंडा द्वारा पूजा-पाठ, व कथा करने के बाद सामूहिक लोकगीत, लोक-नृत्य के माध्यम से खुशियां मनाते हैं। करम पर्व के समय शाम में करम गाड़ने के बाद गाँव के पाहन पूजा सम्पन्न करते हैं, पूजा के समय पाहन के साथ पनभरा, और मुंडा भी रहते हैं, पूजा के बाद गाँव के लोग पाहन से लोककथा सुनते हैं। तत्पश्चात करम लोकगीत (लहसुवा राग) के साथ अखड़ा में आए लोग पारंपरिक ढोल – नगाड़े की ताल पर नाचते गाते हुए खुशियां मनाते हैं। पूरी रात करम गीत (लहसुवा गीत) में ही नाचते हैं, और सुबह होने के बाद चिटिद, जपी, गेना, होजोर, जदूर लोकगीत गाए जाते हैं। वहीं बा पर्व में पूरी रात जदूर, गेना, होजोर गीत गाए जाते हैं, और सुबह के समय करम लोकगीत गाए जाते हैं।
2. **चिटिद अखड़ा :** यह अखड़ा भी मुंडा परंपरागत अखड़ा है, बा पर्व के बाद दूसरे या तीसरे दिन से चिटिद अखड़ा में चिटिद लोकगीत गाए व नाचे जाते हैं, इसकी समय सीमा बा पर्व के ठीक बाद से चैत से जेठ मास तक होता है, वर्तमान समय में चिटिद अखड़ा भी लगभग खत्म हो चुकी है। चिटिद अखड़ा हसादा और नागुरी दोनों क्षेत्र में मिलेंगे। लेकिन रचा और बरोया अखड़ा केवल नागुरी क्षेत्र में ही मिलेंगे।

नागुरी क्षेत्र के पारंपरिक अखड़ा :

1. करम अखड़ा, बा (सरहुल) अखड़ा
2. चिटिद अखड़ा
3. रचा सुसून (मु. सुसून/हिं. नृत्य) अखड़ा : रचा अखड़ा नागुरी क्षेत्र में होता है, रचा नृत्य फगुआ काटने के दूसरे दिन से शुरू होती है और 15 दिन से लेकर पूरे एक महीने तक चलता है, किसी – किसी गाँव में फगुआ से बा पर्व आने तक रहता है। गाँव के युवक-युवती शाम के समय अखड़ा में जमा होकर दो टीम बनाते हैं और नाचते हैं। यह अखड़ा अब लगभग खत्म हो चुके हैं।
4. बरोया अखड़ा : बरोया अखड़ा नागुरी क्षेत्र के गाँव में मिलते हैं। यह नाच सरहुल के बाद चैत महीना से शुरू होती है, और जेठ महीना तक चलता है। जहां गाँव के लोग शाम के समय एकत्रित होकर बरोया लोकगीत में नाचते हैं, नाच दो टीम के बीच होती है, अब यह अखड़ा भी खत्म हो चुकी है।

गाँव - किता टोला, तोरपा (खूँटी) करम/बा(सरहुल) अखड़ा (पेड़ के नीचे स्थित रसिका दिरि (उत्साह पत्थर/खुशी का पत्थर) यह पत्थर लोगों के बैठने के लिए होते हैं।

हसादा क्षेत्र के ज्यादातर गाँव में मुख्यत: एक ही अखड़ा है। करम और बा अखड़ा, जो मुंडा गाँव का मुख्य पारंपरिक अखड़ा है। यह गाँव के ठीक बीचोंबीच खाली स्थान पर स्थित होता है। यहीं पर गाँव की पारंपरिक ग्राम सभा, विवादों का समाधान होता है। मुख्य अखड़ा में मुंडाओं का पारंपरिक पर्व-त्योहार जैसे – करम, बा(सरहुल), सोहराई के समय पूजा-पाठ होने के बाद सामूहिक लोकगीत, लोक-नृत्य, पारंपरिक वाद्य-यंत्र की धुन में लोग एकत्रित होकर नृत्य करते हैं। इसके अलावे चिटिद अखड़ा, रचा अखड़ा, बरोया अखड़ा भी मुंडा गाँव का पारंपरिक अखड़ा के अंतर्गत आते हैं। ये तीनों अखड़ा गाँव के किनारे स्थित होता है।

नागुरी क्षेत्र के मुंडा गाँव में पारंपरिक अखड़ा तीन तरह के होते हैं, इनमें मुख्य अखड़ा करम व बा अखड़ा है। इसके अलावे रचा/चिटिद, बरोया अखड़ा भी है। जो गाँव के किनारे में स्थित होता है। लेकिन अब ये अखड़ा बहुत ही कम गाँव में हैं अब पहले जैसा रचा और बरोया नाच नहीं होती है। इसके अलावे मुंडा जनजाति में सांस्कृतिकरण का प्रभाव जिस गाँव में हुआ है वहाँ मुंडा परंपरा सरना व ईसाई दोनों धार्मिक समुदाय के अखड़ा हैं, ईसाइयों का अखड़ा सभी गाँव में नहीं मिलेंगे, जिस गाँव में ईसाई धर्म का ज्यादा प्रभाव हुआ है, उसी गाँव में ईसाइयों के अखड़ा अलग बने मिलते हैं। यह ईसाइयों का भजन अखड़ा है जो गाँव के मुख्य व पारंपरिक अखड़ा से दूर या गाँव के किनारे पर बनी होती हैं। जहां ईसाई मुंडा समुदाय के लोग भजन करते हैं, यह भजन अखड़ा मुंडाओं के पारंपरिक अखड़ा के अंतर्गत नहीं आता है। अखड़ा परंपरा में परिवर्तन व खत्म होने से मुंडाओं की सामाजिक – सांस्कृतिक, नैतिक

मूल्यों का ह्रास हो रहा है, जिसके कारण वर्तमान पीढ़ी के युवा अपने समाज में निहित विशेषता व महत्व को भूलते जा रहे हैं। वर्तमान समय में मुंडा समाज के बुध्दिजीवि लोग, संगठन, सरकारी, गैर-सरकारी संस्थान अखड़ा परंपरा पर विचार – विमर्श कर रहे हैं, आज कई ऐसे संगठन, संस्थान हैं जो अखड़ा को पुनर्जीवित करने पर बल दे रहे हैं, कई युवा संगठन सांस्कृतिक मंच इसे पहचान के रूप में पुनर्जीवित कर रहे हैं, सरकारी व गैर-सरकारी प्रयासों से सांस्कृतिक संरक्षण की दिशा में पहल की जा रही है। जिससे की आदिवासी अस्मिता और अस्तित्व की संवर्धन-संरक्षण की दिशा में पहल की जा सके। अखड़ा परंपरा को पुन: पुनर्जीवित करने का सबसे पहला श्रेय डॉ. रामदयाल मुंडा को दिया जाता है। उनके बाद वर्तमान समय में उनके सुपुत्र श्री गुंजल इकिर मुंडा द्वारा आगे बढ़ाए जा रहे हैं। आज जरुरत है मुंडा समाज में युवाओं की भागीदारी को सुनिश्चित करते हुए उसे आगे बढ़ाने और समाज को जागरूक करने के साथ-साथ अखड़ा परंपरा के महत्व को समझने की।

परिवर्तन व प्रभाव :

सांस्कृतिकरण : पिछले कुछ वर्षों में मुंडा आदिवासीयों में बाहरी संस्कृति का गहरा प्रभाव पड़ा है। जिसका प्रभाव मुंडाओं की अखड़ा संस्कृति में तेजी से परिवर्तन के साथ प्रभावित हुई है, जैसे कि जो मुंडा लोग अपनी पुरानी आस्था सरना धर्म को छोड़कर ईसाई या हिन्दू धर्म को अपना लेते हैं वे अपने – आप ही मुंडा पारंपरिक संस्कृति, व्यवस्था सभी से दूर हो जाते हैं। वर्तमान समय में जिस गाँव में सरना और ईसाई समुदाय के लोग हैं वहाँ दोनों के अलग – अलग अखड़ा देखने को मिलेंगे। जहां मुंडा सरना समुदाय अपनी पारंपरिक पर्व – त्योहार जैसे करम, सरहुल पूजा के समय गाँव के मुख्य अखड़ा में पाहन द्वारा पूजा – पाठ के बाद पारंपरिक ढोल – नगाड़े की धुन में उत्सव मनाते हैं, अखड़ा में सभी लोग बराबर होते हैं यहाँ किसी को ऊँच-नीच नहीं समझा जाता है। वहीं मुंडा ईसाई समुदाय के लोग वर्ष में दो बार क्रिसमस और पास्का (ईस्टर) पर्व के समय मुख्य अखड़ा से दूर गाँव के किनारे में बने अलग अखड़ा में नाचते – गाते व भजन करते है। दोनों समाज की गीत – नृत्य में भी भिन्नता दिखती है। वहीं जिस गाँव में हिन्दू का प्रभाव ज्यादा हुआ है या जिस गाँव में हिंदुओं की संख्या ज्यादा है वहाँ अखड़ा ही नहीं है।

डीजे का प्रभाव : मुंडा समुदाय में आधुनिकीकरण - डिलिटलीकरण का सकारात्मक व नकारात्मक दोनों तरह प्रभाव पड़ा है, लेकिन मुंडा समाज में इसका नकारात्मक प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादा हुए हैं। आज की युवा पीढ़ी अपनी मुंडा पारंपरिक ढोल – नगाड़े, माँदर को छोड़कर डीजे साउंड की ओर ज्यादा आकर्षित हो रहे हैं जिसके कारण वे अपनी पारंपरिक संस्कृति कला – संगीत में निहित मूल्य व ऐतिहासिक दृष्टिकोण व पृष्ठभूमि को भी छोड़ते व भूलते जा रहे हैं। उनकी लोक-परंपरा जो अखड़ा से अपनी नई पीढ़ी को हस्तांतरित होती है अखड़ा के स्वरूप में बदलाव व खत्म होने से लोक परंपरा का संचार प्रभावित हो रही है।

इंटरनेट सोशल मीडिया का प्रभाव : आज की युवा पीढ़ी इंटरनेट, सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी और अपनी समाज की पारंपरिक सामाजिक सांस्कृतिक क्रिया-कपालों को देश-दुनिया में नई पहचान देने का काम कर रहे हैं लेकिन इनमें से बहुत से युवाओं को अपने समाज में निहित मूल्यों की सही जानकारी नहीं होने के कारण गलत जानकारी भी अपने सोशल मीडिया में देते हैं, जिसके कारण उस समाज के प्रति लोग अपने- अपने आधार पर बहुत बार गलत विचार धारणा बना लेते हैं, और ये सब आज के युवा पीढ़ी का अपने समाज के बुजुर्ग बुद्धिजीवि लोगों के साथ बैठकर विचार-विमर्श में शामिल ना होना, उनसे दूरियाँ बनाना भी एक कारण है।

विस्थापन : अखड़ा संस्कृति के परिवर्तन व प्रभाव में विस्थापन भी एक मुख्य कारण है शहरीकरण विकास, औद्योगिकीकरण के कारण पहले से निवास कर रही समुदाय की संस्कृति के साथ – साथ उनकी पारंपरिक अखड़ा, पूजा स्थान जैसे – सरना स्थल, जयर, जहेरथान, ससन स्थल, दिबिगुड़ी (ग्राम पूजा स्थल) आदि सभी प्रभावित हो रहे हैं।

निष्कर्ष (Conclusion) : अखड़ा मुंडा समाज की बहुआयामी संस्था व ऐतिहासिक विरासत है। जो संस्कृति और प्रकृति के संरक्षण – संवर्धन के साथ ही साथ सामाजिक एकता, नैतिक ज्ञान और स्थानीय स्वशासन को सुदृढ़ करती है। अखड़ा केवल ऐतिहासिक अवशेष नहीं, बल्कि जीवंत सामाजिक शक्ति है, जो मुंडा समाज के विकास में केन्द्रीय भूमिका निभाई है। अखड़ा मुंडा समाज का केवल सांस्कृतिक मंच नहीं, बल्कि सामाजिक संगठन, शिक्षा, प्रशासन और सामुदायिक विकास का मुख्य केंद्र है। यह परंपरा आज भी मुंडा समाज की पहचान और एकता को सुदृढ़ बनाए हुए हैं। इस तरह मुंडा समाज के समग्र विकास में अखड़ा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन से पता चलता है, कि अखड़ा परंपरा को पुनर्जीवित करने में वर्तमान के युवा पीढ़ी को आगे आने की जरुरत है, और साथ ही अपने मुंडा समाज के बुजुर्ग व बुध्दिजीवि, जानकारों से विचार – विमर्श कर सामाजिक – सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण – संवर्धन की दिशा व प्रक्रिया में बल देने की। जिससे कि वे अपने समाज की पारंपरिक ज्ञान, कला, व इतिहास को अपने आने वाले कल के लिए संरक्षित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। जो पूरे समाज के विकास में एक नई विश्व दृष्टिकोण व दिशा प्रदान कर सके।

संदर्भ सूची (References List) :

1. हॉफमैन, जॉन बैप्टिस्ट (1950) “एनसाइक्लोपीडिया मुण्डारिका” Superintendent, Government Printing Bihar, Patna
2. कुमार सुरेश सिंह, बिरसा मुंडा और उनका आंदोलन (1872-1901), (2003) वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली
3. मुंडा रामदयाल (2014) “आदिवासी अस्तित्व और झारखंडी अस्मिता के सवाल”, रुम्बुल, रांची

4. मुंडा, रामदयाल एवं मानकी, रत्न सिंह (2009) "आदि धर्म" राजकमल प्रकाशन न्यू दिल्ली
5. पाण्डेय, गया (2007) "भारतीय जनजातीय संस्कृति" कांसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी करमपुरा, न्यू दिल्ली
6. पाण्डेय गया (2018) सामाजिक सांस्कृतिक मानवशास्त्र, क्राउन पब्लिकेशन
7. रणेनद्र, सुधीर पाल (जनवरी 2019) "झारखंड एनसाइक्लोपीडिया" बिर – बुरु के आस – पास खंड 2, वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली
8. रॉय एस. सी. (1912) "The Mundas And Their Country" सिटी बुक सोसाइटी, कलकत्ता
9. शर्मा बिमला चरण (2014) "झारखंड की जनजातियाँ" झारखंड झरोखा, रांची
10. विद्यार्थी, एल. पी. एवं राय कुमार विनय (1977) "द ट्राइबल कल्चर ऑफ इंडिया" कांसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी दिल्ली
11. त्रिगुणायत जगदीश, (1957) "बाँसुरी बज रही" (रुतु सड़ितन) बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
12. त्रिगुणायत जगदीश (1968) "मुंडा लोककथाएं बिहार कल्याण विभाग, पटना (Bihar Welfare Department)